अभिव्यक्ति.....
बालमन की आवाज़

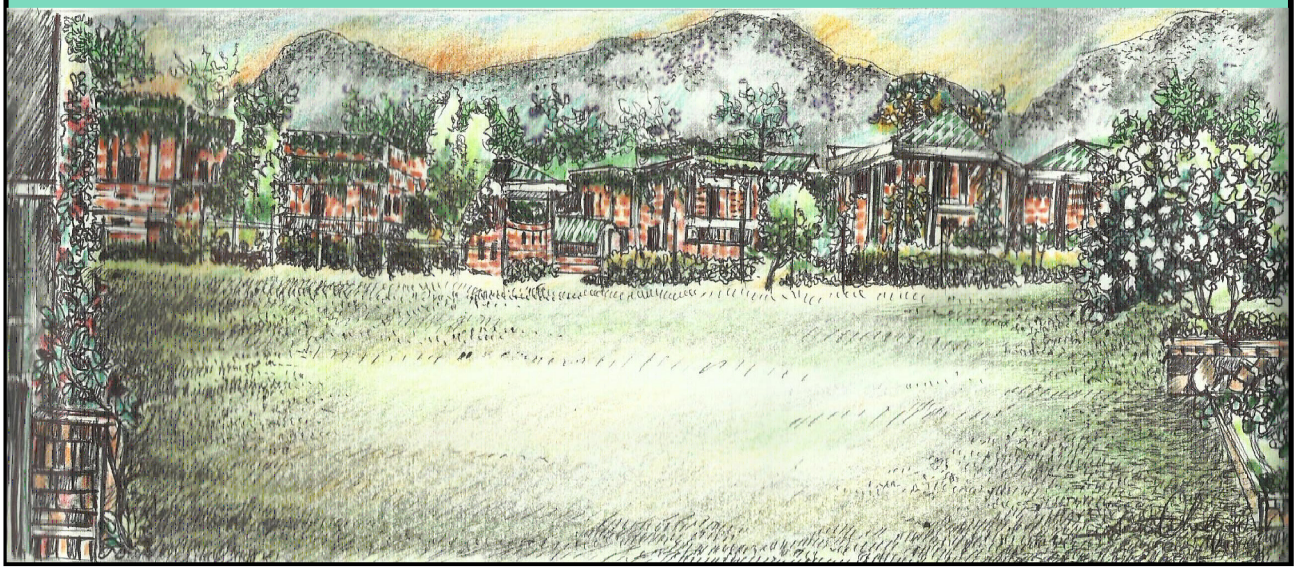

संस्करण ०१, २०१४ स्थापित : २०१४ सितंबर, २०१४

संपादक की कलम से .....

प्रिय पाठकगण,

कासीगा स्कूल के भारतीय भाषा विभाग की ओर से प्रकाशित प्रथम ऑन लाइन पत्रिका 'अनुभूति' के माध्यम से पहली बार आपसे जुड़ते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका विद्यार्थियों में समाहित उनकी वैचारिक अभिव्यक्ति की क्षमता को प्रस्फुटित एवं पल्लवित करने में सहायक सिद्ध होगी। मुझे विश्वास है कि विद्यार्थियों का अथक परिश्रम और अभीष्ट प्रदर्शन उनकी रचनाधर्मिता और क्रियाशीलता को एक नवीन आयाम देने में सहायक सिद्ध होगा। यह पत्रिका उपेक्षित बन रहीं भारतीय भाषाओं के प्रति उदासीन भावों को दूर कर अपने प्रति लोगों का दृष्टिकोण परिवर्तित करने में समर्थ होगी।

मानव ईश्वर की अद्भुत रचना है जो अपनी योग्यता के अनुरूप विभिन्न भावनाओं और कलाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता रखता है, भले ही वह सुख हो या दुःख अथवा लक्ष्य साधने की कला। यदि अभिव्यक्ति कला का विकास न हो तो मानव के संपूर्ण विकास में बाधा उत्पन्न हो जाती है क्योंकि अभिव्यक्ति कौशल भी मानव के व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग है। बाल मन असीम कल्पनाकाश में तैरता हुआ ईश्वर द्वारा निर्मित इस चराचर जगत के सम्पूर्ण सौंदर्य का आस्वादन करता है। उनमें छिपी प्रतिभा, अपार ऊर्जा एवं कल्पना शक्ति को मात्र मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। मेरे सहयोगी उनकी उसी क्षमता को दिशा देकर उनकी बौद्धिक अभिव्यक्ति को इंद्रधनुष के विविध रंगों के समान आकर्षक रूप में संजोने का कार्य करेंगे।

इस पत्रिका में कहानियाँ, कविताएँ, संस्मरण तथा हिंदी की अनेक विधाओं को संकलित कर जनमानस के समक्ष रखना ही हमारा उद्देश्य है। बाल रचनाकारों की चित्रकारिता को भी हम सम्मानपूर्वक संकलित करेंगे। भारतीय भाषा विभाग की रचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ हम विद्यालय की प्रमुख गतिविधियों को भी प्रकाशित करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। मेरा विश्वास है कि आपके सुझाव हमारे विकास में सहायक होंगे।

विपुल सिंह
संपादक
अभिव्यक्ति..... बालमन की आवाज़
कासीगा स्कूल, देहरादून।

काव्य-संकलन

जल ही जीवन

जीवन में जो अमृत बनकर
हम सबको जीवन देता है,
जल ही जीवन है धरती पर
संसार यही सच कहता है।

जीवन पथ पर हर प्यासे की
यह जल ही प्यास बुझाता है,
गरमी से प्यासे खेतों की
जल ही तो तपन मिटाता है।

हम बिन सोचे करते प्रयोग
इस जल को व्यर्थ बहाते हैं,
जो जीवन देता है सबको
उसको ही व्यर्थ गँवाते हैं।

इससे दुनिया रंगीन बनी
यह भूल हम सभी जाते हैं,
इसमें कूड़ा-कचरा भर कर
हम दूषित इसे बनाते हैं।

शुभ शिखर मिश्र
कक्षा - आठवीं

मेरी माँ

मेरी सबसे अच्छी माँ
हम सबकी सुनती है माँ,
ध्यान सभी का रखती माँ
अच्छे गुण सिखलाती माँ।

ध्यान ईश का धरती माँ
सबसे पावन होती माँ,
चिंता सबकी करती माँ
दुःख सबके हरती है माँ।

अच्छी बात बताती माँ
सबको खूब हँसाती माँ,
जमकर हमें खिलाती माँ

लोरी हमें सुनाती माँ।
बच्चों को भाती है माँ
गम को दूर भगाती माँ,
चलना हमें सिखाती माँ।

विख्यात शिवहरे
कक्षा - सातवीं

दिल करता है

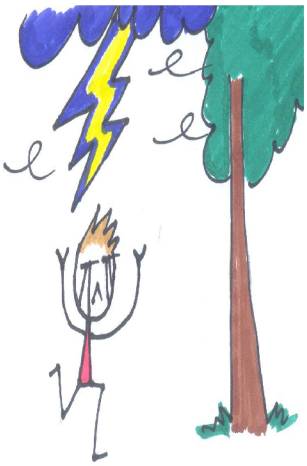

दिल करता है दुनिया भर में
ऐसा कुछ कर डालूँ,
जहाँ कहीं भी दिखे समस्या
सबका हल कर डालूँ।

शिक्षक बनकर दुनिया में
सबको शिक्षा दे डालूँ,
नेता बनकर देश के हित में
सब निर्णय ले डालूँ।

जज बनकर भ्रष्टाचारी को
प्राणदण्ड दे डालूँ,
बनकर पुलिस हर एक मुजरिम को
जेल के अंदर डालूँ।

समय से हो सब काम यहाँ पर
ऐसी आदत डालूँ,
मैं अपने मित्रों संग मिलकर
धरती को स्वर्ग बना डालूँ।

यश आनंद वर्मा
कक्षा - सातवीं

सावन की फुहार

रंग-बिरंगा सावन आया,
साथ में काले बादल लाया।
मोर झूमते हैं मस्ती में,
मेढ़क कूद रहे बस्ती में।

खेतों में फैली हरियाली,
कोयल कूँके डाली-डाली।
झम-झम काले बादल बरसे,
चम-चम-चम बिजली चमके।

पानी ने आफत कर मारी,
सारी धरती तर कर डाली।
बच्चे शोर मचाते निकले,
खुशियाँ खूब मनाते निकले।

सावन ने बदली सब काया,
गरमी तपन मिटाता आया।
सावन का गुलाबी रंग छाया,
पौधों में नव जीवन आया।

हर्षित अग्रवाल
कक्षा - सातवीं

बच्चे

बच्चे सबसे होते अच्छे,
दिल के सच्चे होते बच्चे।
झूठ बोलना इन्हें न आता,
सच खुद मुँह से बाहर आता।

लगते प्यारे हँसते बच्चे,
करें शरारत मिलकर बच्चे।
झगड़ा कर मिल जाते बच्चे,
सब पर प्यार लुटाते बच्चे।

दिल में बैर न रखते बच्चे,
सबका मन बहलाते बच्चे।
घर में खुशियाँ लाते बच्चे,
घर को स्वर्ग बनाते बच्चे।

निशांत चौहान
कक्षा - सातवीं

छोटी बच्ची

जब मैं छोटी बच्ची थी
आदत मेरी अच्छी थी
जमकर शोर मचाती थी
सबको खूब सताती थी।

खेल-खेल में रोती थी
हर एक बात पर हँसती थी
पापा की मैं प्यारी थी
घर की राजदुलारी थी।

माँ को खूब झिकाती थी
भूख-भूख चिल्लाती थी
भाई को चिढ़ाती थी
खूब डाँट पड़वाती थी।

अब मैं जमकर पढ़ती हूँ
काम ध्यान से करती हूँ
अब थोड़ा डर लगता है
सोच-समझ कर चलती हूँ।

अनन्या रौतेला
कक्षा - सातवीं

सीनियर स्कूल हिन्दी भाषण प्रतियोगिता २०१४

मानवीय भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की कला ही भाषण कहलाती है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में इस कला का सन्निहित होना भी अपेक्षित माना जाता है। कासीगा स्कूल देहरादून के भारतीय भाषा विभाग के द्वारा दिनांक २६ जुलाई २०१४ को वरिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में चिन्तन एवं मनन क्षमता विकसित करने के साथ-साथ उनके वाक् कौशल का विकास करना भी है। विद्यालय का विचार है कि अभिव्यक्ति कौशल का विकास कर विद्यार्थी आगामी जीवन में एक सफल नेता, अभिनेता बनने के साथ-साथ एक ज़िम्मेदार नागरिक बनना भी सीखते हैं।

भाषण प्रतियोगिता के द्वारा विद्यार्थियों के मन में बैठी झिझक को दूर कर उन्हें अपनी बात जनमानस के सामने रखने का आत्मिक बल प्रदान किया जाता है जिससे वे एक स्वछंद अभिव्यक्ति कर सकें। विद्यालय में आयोजित इस भाषण प्रतियोगिता का कुशल संचालन कक्षा नवमीं के छात्र शिवम् ने किया। सर्वप्रथम शिवम् अग्रवाल ने जनसमुदाय का अभिनंदन करते हुए उनका परिचय प्रतियोगिता के निर्णायकों से कराया। इस प्रतियोगिता में निर्णायकों के रूप में विद्यालय के ही वरिष्ठ हिंदी प्रवक्ता श्रीमान नवल किशोर बहुगुणा, हिंदी विभाग की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती विनीता कोठियाल एवं वाणिज्य विभागाध्यक्ष श्रीमान परमिंदर घई थे।

इस प्रतियोगिता में वाग्मिता स्वरूप, अमर्त्य शर्मा, रिद्धिमा पोदार, यतिन गर्ग, स्पर्श रस्तोगी एवं शुभ शिखर मिश्र ने सहभागिता की। इस प्रतियोगिता में वक्ताओं ने विभिन्न रोचक एवं सामयिक विषयों का चयन कर जनसमुदाय को भाव-विभोर कर दिया। कुछ वक्ताओं ने आज की युवा पीढ़ी को वैश्विक समस्याओं से अवगत कराते हुए उनसे निपटने के तरीके भी सुझाने की कोशिश की। कुछ वक्ताओं ने अपने हास्य विषयों से उपस्थित जनसमुदाय का भरपूर मनोरंजन भी किया।

सर्वप्रथम वाग्मिता स्वरूप ने देशव्यापी समस्या भ्रष्टाचार पर अपने विचार रखते हुए दर्शकों को यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि जब तक हम स्वयं इस भ्रष्टाचार का दामन नहीं छोड़ देते तब तक इस समस्या का अंत नहीं हो सकता। अगले वक्ता अमर्त्य शर्मा ने अपनी ओजस्वी वाणी में परोपकार नामक विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अगली वक्ता रिद्धिमा पोदार ने श्रोताओं को यह बताने की कोशिश की कि भले ही आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हों लेकिन आज भी हम अंधविश्वासों से अछूते नहीं हैं।

श्रोताओं ने उनकी वक्तव्य शैली की जमकर सराहना की।

यतिन गर्ग ने अपने वक्तव्य में भारत की महानता को बड़े ही व्यंग्यात्मक तरीके से प्रस्तुत किया। स्पर्श रस्तोगी ने गधे जैसे तुच्छ माने जाने वाले जीव के महान गुणों की चर्चा करते हुए हम सभी को उसके महान गुणों से सीख लेने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रतियोगिता के अंतिम वक्ता शुभ शिखर मिश्र ने बड़े ही सहज एवं सौम्य तरीके से परिवार में पति-पत्नी के अटूट संबंधों की व्याख्या प्रस्तुत कर मानव समुदाय से इन रिश्तों की कद्र करने की हिमायत की।

वक्ताओं के भाषण के पश्चात प्रतियोगिता की निर्णायिका श्रीमती विनीता कोठियाल जी ने सभी प्रतिभागियों की भाषण कला को बहुत ही सुंदर बताया। इस प्रतियोगिता में रिद्धिमा पोदार ने प्रथम स्थान, स्पर्श रस्तोगी ने द्वितीय स्थान तथा शुभ शिखर मिश्र ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंत में भारतीय भाषा विभागाध्यक्ष डॉ० राजेश कुमार मिश्र ने प्रतियोगिता को सफल बनाने में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मियों एवं विद्यार्थियों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

शिवम् खण्डेलवाल
कक्षा - नवमीं

कनिष्ठ वर्ग दोहा वाचन प्रतियोगिता

दिनाँक १६ जुलाई २०१४ को कासीगा स्कूल, देहरादून में भारतीय भाषा विभाग द्वारा कनिष्ठ वर्ग में दोहा वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर समस्त जूनियर वर्ग के विद्यार्थी जूनियर छात्रावास में एकत्रित हुए। इस प्रतियोगिता में श्रीमती ममता मिश्रा, श्रीमती संगीता शर्मा एवं श्रीमती विनीता कोठियाल निर्णायिकाओं के रूप में उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन रिद्धिमा गौतम और रिद्धी दीवान ने किया। कार्यक्रम संचालकों ने बड़ी ही कुशलता के साथ सभी श्रोताओं को अपनी सुंदर प्रस्तुति से आकर्षित कर लिया। इस प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया।

इस प्रतियोगिता में चारों सदनों से दो-दो प्रतिभागियों ने अपने-अपने सदन का प्रतिनिधित्व किया जिसमें हरित सदन से रिद्धिमा गौतम और नव्या गोयल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरे स्थान पर रक्तिम सदन के रिधि दीवान तथा उदयन मंडल रहे तथा नील सदन के आदित्य हरलालका एवं प्रांजल गुप्ता ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

इस प्रतियोगिता में कबीर के दोहों का सस्वर वाचन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य समाज सुधारक संत कबीर के दोहों को विद्यार्थियों को आत्मसात् कराना तथा विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा को उजागर करना था। प्रतियोगिता में सभी विजित प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरित कर उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

रिद्धिमा गौतम
कक्षा - पाँचवीं

भद्रराज की यात्रा

आज की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में हम सब इतना खो चुके हैं कि हमें कभी अपने बीते समय के बारे में सोचने का अवसर ही नहीं मिलता। अक्सर लोग कहते हैं कि हमें अगर कभी समय मिले तो एकांत में बैठकर अपने बीते समय के बारे में ज़रूर सोचना चाहिए क्योंकि उससे हमें काफी कुछ ज्ञानार्जन होता है। लेकिन यह सब करने के लिए भी तो खाली समय चाहिए। शायद ही कभी किसी को ऐसा सुअवसर मिलता हो कि वह एकांत में बैठकर आत्मचिंतन कर सके। हर इंसान आगे बढ़ने की चाहत में इतना उलझा हुआ है कि वह पीछे मुड़कर देखना भी नहीं चाहता क्योंकि उसे यह सब समय की बर्बादी लगता है। वह नहीं चाहता कि इतना समय वह व्यर्थ में व्यतीत करे।

जब हम इस अंधी दौड़ में कदम से कदम मिलाते हुए थक जाते हैं तो ज़रूर कुछ देर ठहर कर अपने उस बचपन के स्वर्णिम समय को याद कर लेते हैं जिसमें न तो यह प्रतिस्पर्धा थी और ना ही किसी के प्रति किसी तरह का ईर्ष्या भाव।

कभी-कभी जब हम बचपन की यादों में खो जाते हैं तो हमें कुछ ऐसी घटनाएँ अवश्य स्मरण आ जाती हैं जो बड़ी ही रोमांचकारी और विस्मय से भरपूर रही हों। आज मुझे भी एक ऐसी ही घटना का अनायास ही स्मरण हो आया। जब मैं कक्षा दो का विद्यार्थी था और संयोग से उसी समय मेरे विद्यालय की ओर से मुझे मेरे दोस्तों के साथ हिमालय की श्रृंखला में स्थित भद्रराज की यात्रा का सुअवसर मिला।

मित्रों के साथ किसी भी यात्रा पर जाने का अपना एक अलग ही आनंद होता है। मैंने भी उस यात्रा में सहभागिता करने का मन बना लिया। हमारी इस यात्रा में करीब पैंतीस से चालीस लोग शामिल थे। देहरादून के समीप भाऊवाला से थोड़ा आगे जाकर हिमालय की वादी में स्थानीय लोगों की मदद से आधार कैम्प बनाया गया। इस यात्रा में हमारे साथ चार शिक्षक और दो शिक्षिकाएँ भी थीं। रास्ते में सहयोग के लिए दो स्थानीय लोगों की मदद ली गई।

प्रातःकाल आठ बजे से आधार कैम्प से पर्वतारोहण का दौर शुरू हो गया। अध्यापकों ने सावधानी बरतते हुए आठ-आठ विद्यार्थियों का दल बना दिया। मैं अपने दल में सबसे छोटा था इसलिए सभी लोग बड़ी सावधानी के साथ मेरा ध्यान रख रहे थे। पहाड़ों पर चढ़ते समय बहुत ही ऊर्जा का क्षय होता है इसलिए हम लोगों को बहुत ही थकान हो रही थी। चढ़ते समय गर्मी लगने के कारण हमने अपनी पानी की बोतलों का सारा पानी समाप्त कर लिया था। दोपहर के बारह बजे के कुछ समय बाद हमारे दल के नेता ने हमें ठहरने और कुछ खा-पी लेने का निर्देश दिया। खाने के बाद कुछ आराम मिला तो हाथ पैर हिलने का नाम नहीं ले रहे थे लेकिन दोस्तों के साथ थकान भी अपना दम तोड़ती नज़र आ रही थी।

दोपहर के तीन बजे जोरदार बादलों की गड़गड़ाहट के बाद सभी बहुत घबराने लगे। तभी हमारे दल-प्रमुख ने हमसे कहा कि मौसम ठीक नहीं लग रहा है। अब हम

लोग आगे की यात्रा यहीं रोककर वापस चलेंगे। ना चाहते हुए भी हमें अपने गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना पड़ा।

भारी मन से प्रकृति के रुद्र और सौम्य रूप का अवलोकन करते हुए हम नीचे लौटने लगे। तभी रास्ते में ओले पड़ने लगे। मेरे सभी मित्र अपनी पानी की बोतलों में उन ओलों को भरकर उनके पानी का स्वाद चखने लगे। जब हमारे अध्यापकों ने हमें ऐसा करते देखा तो आग बबूला हो उठे। गुरूजी ने हम लोगों को डाँटते हुए समझाया, 'अरे, यह क्या कर रहे हो ? ओलों का पानी पीओगे तो गला बंद हो जाएगा।' लेकिन चुप-चुप के हम लोग अपनी शैतानियाँ करते रहे। नीचे पहुँचते-पहुँचते शाम हो चुकी थी। अँधेरा घिर चुका था। जब हमारे समूह की गणना की गई तो उसमें दो बच्चे कम थे। जब हमारे दल प्रमुख को पता चला तो उन्हें बहुत घबराहट हुई और चार निकट के गाँववालों को लेकर वे हमारे मित्रों की तलाश करने निकल गए।

तीन घण्टे बाद जब गुरूजी नीचे आए तो क्रोध से उनका चेहरा तमतमाया हुआ था। हम सभी को बहुत डर लग रहा था। विद्यालय पहुँचकर हम सबको काफी डाँट पड़ी। लेकिन फिर भी वह यात्रा इतनी रोमांचक थी कि इसे हम जीवन भर नहीं भूल सकते।

शुभ शिखर मिश्र
कक्षा - आठवीं

शिक्षा का महत्व

विद्यार्थी जीवन सभी के जीवन का सबसे स्वर्णिम समय होता है। मानव अपने जीवन की इस अवस्था में जो चीज़ें भी ग्रहण करता है वे सभी स्थायी रूप से उसके जीवन में प्रवेश कर जाती हैं। आज के समय में हर माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा के लिए अच्छे प्रबंध की कोशिश करता है। वह चाहता है कि उसका बच्चा बड़ा होकर शिक्षित होने के साथ-साथ एक अच्छी नौकरी भी प्राप्त करे जिससे वह अपना जीवन यापन अच्छे ढंग से कर सके। आज लोगों को शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण काफी बदल चुका है। आज इंसान शिक्षा की प्राप्ति केवल ज्ञान वृद्धि हेतु ही नहीं करता वरन् वह ऐसी शिक्षा पाने में आतुरता दिखाता है जो उसके भविष्य में उसे रोजगार और प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक सिद्ध हो।

समाज में भी लोगों की सोच का काफी प्रभाव पड़ता है क्योंकि मानव की सोच से प्रभावित होकर ही समाज की संरचना प्रभावित होती है। आज हर माता-पिता अपने बच्चे को बड़े से बड़े स्कूल में इसलिए शिक्षा दिलाना चाहता है ताकि वह समाज में अपने सगे-संबंधियों से अपने स्तर के बारे में दिल खोलकर बड़ी-बड़ी बातें कर सके। समाज में जब से शिक्षा को अंकों के पैमाने पर तोला जाने लगा है तब से हर माता-पिता एवं अभिभावक बच्चों पर अच्छे अंक लाने का दवाब बनाते हुए दिखाई दे रहे हैं। आजकल लोगों की नज़र में वही विद्यार्थी अधिक अच्छा है जो अपनी परीक्षा में अच्छे अंक ला रहा हो। अंकों की महिमा के आगे बच्चों का बचपन और शिक्षा का महत्व दोनों ही बदलते दिखाई दे रहे हैं।

आज समाज की दशा देखकर कौन कह सकता है कि हमारा समाज विकास की ओर गतिमान है ! समाज में बड़े-बुजुर्गों का काम होता है - युवाओं को दिशा दिखाना और उस मार्ग पर चलकर कार्य को मूर्त रूप देना, हमारे शिक्षित युवाओं का काम है। लेकिन आज नवयुवकों और अनुभवी लोगों के बीच वह सामंजस्य दिखाई नहीं देता जो समाज और देश के विकास के लिए अति आवश्यक है। जब तक हम अपनी इस युवा

तब तक समाज के विकास की कल्पना खोखली साबित होगी। हमें अपने समाज के युवाओं को यह समझाना होगा कि अनुशासित योद्धा ही विकास की जंग को जीत सकता है।

समाज को सही दिशा देने के लिए हमें अपने देश की शिक्षा नीति में भी आवश्यक परिवर्तन करने होंगे जिससे समाज के युवाओं को आधुनिक युग की चुनौतियों से लड़ने के लिए शिक्षा रूपी अमोघ अस्त्र प्राप्त हो सके। हमें समाज में परम्परागत शिक्षा पद्धति का त्याग कर वैकल्पिक शिक्षा और व्यावहारिक शिक्षा को अधिक बढ़ावा देना होगा। समाज में विद्यार्थियों की बढ़ती हुई अनुशासनहीनता को दूर करने के लिए शिक्षा के नए मानक स्थापित करने होंगे। व्यावसायिक शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाना होगा जिससे अधिक संख्या में शिक्षार्थी स्वरोजगार की ओर प्रेरित हो सकें। अगर सरकार और समाज मिलकर कार्य करें तभी हम अपने समाज को नवीन दिशा देने में सफल हो सकते हैं।

सृष्टि शर्मा
कक्षा - आठवीं

मैं और मेरा अनोखा दोस्त

जीवन में हर व्यक्ति अनेक लोगों से मिलता है क्योंकि लोग यह कहते हैं कि जीवन एक मेले की तरह है जिसमें अनेक लोग मिलते और बिछड़ते हैं। मैं भी कासीगा स्कूल में आने पर अनेक लोगों से मिला लेकिन जिसने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया, वह मेरा अनोखा दोस्त था। उसका नाम रोशन गुप्ता था। वह बड़ा ही ज़िंदादिल और खुशमिजाज इंसान था। वह पढ़ने और खेलने दोनों में ही बहुत अच्छा था। वह आपनी अच्छी आदतों के कारण अपने साथियों में बहुत ही लोकप्रिय भी था। वह अपने दोस्तों के लिए कुछ करने के लिए हमेशा तैयार रहता था। जब पहली बार उससे मेरी मुलाकात हुई तो वह फुटबॉल खेलने में मस्त था। जैसे ही लोगों ने उसे बताया कि हमारी कक्षा में एक नए मित्र का आगमन हुआ है, वह दौड़कर मुझसे मिलने के लिए हमारे विद्यालय के मुख्य द्वार के निकट पहुँच गया।

मेरे करीब आते ही उसने हाथ बढ़ाकर मुझसे मित्रता के भाव से अपना परिचय देते हुए मेरे बारे में पूछा। मैंने भी निस्संकोच उसे अपना परिचय दे डाला। वह बड़े ही विनम्र भाव का लगा था। मेरा दिल एक अच्छे मित्र को पाकर खुशी से झूमने लगा। कुछ ही दिनों में हम बहुत ही अच्छे मित्र बन गए। वह विद्यालय के शुरूआती दिनों में मेरा अच्छा सहयोगी रहा था। हम दोनों एक दूसरे पर इतना विश्वास करते थे कि कभी भी एक दूसरे से कुछ भी नहीं छिपाते थे। मुझे अभी तक याद है कि कई बार उसने मुझे अनेक परेशानियों से बाहर निकाला था। जब कभी मैं दुःखी होता था, तो वह मेरे समीप पहुँचकर अपने प्यार भरे शब्दों से मेरी परेशानियों में मुझे साहस बटोरने का बल प्रदान करता था।

लगभग एक वर्ष तक हम दोनों ने बहुत ही और यादगार पलों को एक साथ जिया। एक दिन मुझे एक अन्य मित्र ने आकर बताया कि क्या तुम्हें पता है ? रोशन स्कूल छोड़कर जा रहा है। पहले तो मुझे यह केवल एक मज़ाक लगा लेकिन मेरा दिल सहम गया। मैं तुरंत एक गहरी सोच में पड़ गया कि अगर रोशन चला गया तो मैं अकेले कैसे रह पाऊँगा ? मैं तुरंत ही रोशन के पास पहुँचा और कहा, 'रोशन यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? क्या तुम स्कूल छोड़कर जा रहे हो ?' कुछ देर तक वह सिर को नीचे झुकाकर खड़ा रहा और कहने लगा, 'दोस्त, ज़िंदगी किसी के आने या जाने से नहीं रुकती, यह तो सतत् अपने गंतव्य की ओर ही गतिमान रहती है। मैं तुमसे यही कहूँगा कि लगातार अपने काम में लगे रहो और तब तक मत रुकना, जब तक अपने उद्देश्य को प्राप्त न कर लो।' यह बोलने के बाद वह सीधे अपने कक्ष की ओर चला गया और मैं हतप्रभ खड़ा उसके शब्दों के बारे में सोचता रहा। वह हम सब से दूर जा चुका है लेकिन आज भी उसके अंतिम शब्द मेरे कानों में गूंजते रहते हैं।

ऋषभ राजघरिया
कक्षा - नवमीं

नवोदित चित्रकार

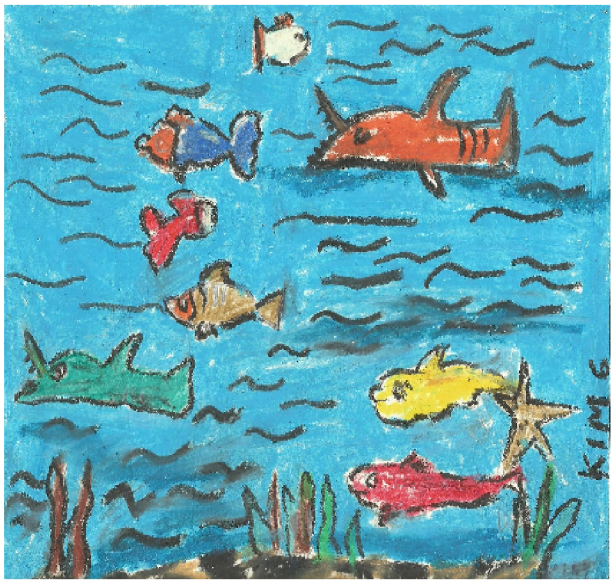

खौफ़

एक समय की बात है। एक छोटे कस्बे में एक छोटा-सा परिवार रहता था। उस परिवार में तीन सदस्य थे - माता-पिता और उनका चौदह साल का एक बेटा। उनका मकान शहर के आखिरी छोर के नज़दीक था। मकान की अपनी कई विशेषताएँ थीं। तीन सदस्यों के हिसाब से वह काफी बड़ा था। उस मकान के करीब ही एक पुराना कब्रिस्तान था जहाँ दिन में भी जाना भयभीत कर देता था। लेकिन वह परिवार बहुत ही शांति के साथ एक लम्बे समय से वहाँ रह रहा था। उनके मकान के ही करीब, दाईं ओर से एक सड़क पुराने किले की ओर जाती थी। दिन के समय उस किले को देखने जाने वालों की वज़ह से काफी भीड़-भाड़ रहती थी। यदि कोई भी नाते-रिश्तेदार उनके घर आता तो उसे यह आश्चर्य होता था कि ये लोग भला कैसे इस स्थान पर शांति से रह लेते हैं ? लेकिन उनको अपना घर ही सबसे सुंदर लगता था।

कुछ दिनों के बाद स्कूलों की छुट्टियाँ होने वाली थीं। सबने इस बार कश्मीर घूमने जाने का कार्यक्रम बनाया। सभी बहुत खुश थे क्योंकि काफी लम्बे अरसे के बाद वे लोग घूमने कहीं बाहर जाने वाले थे। घूमने के लिए सारी खरीददारी कर ली गई। माता-पिता ने सोचा कि इतने दिन बाहर रहने पर घर की देखभाल का क्या होगा ? तो उनके बेटे ने उन्हें सुझाव देते हुए कहा कि जिस तरह पड़ोस वाले अंकल घूमने जाने पर अपनी घर की ज़िम्मेदारी आप लोगों को दे गए थे, उसी प्रकार आप भी अपने घर की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी उन्हें सौंप सकते हैं। सभी को यह बात पसंद आई और पड़ोसी को यह बता दिया गया कि कृपया हमारे बाहर रहने तक घर की देखभाल करते रहिएगा।

अगले ही दिन पूरा परिवार कश्मीर के लिए निकल पड़ा। कश्मीर पहुँचकर सबने खूब सैर की। डल झील का आनंद लिया। बर्फ की चादर पर सरकते हुए रोमांचक अनुभव प्राप्त किए। फूल बाग की सैर करते हुए पूरा परिवार अपने होटल पहुँचा और अगले दिन घूमने की योजना बनाने लगे। तभी उन्हें याद आया कि हमारा मकान शहर के आखिरी कोने में है। वहाँ कुछ भी हो सकता है। हमें कल शिकारा की सवारी करने के बाद बची हुई सारी जगहें घूमनी होंगी और फिर अगले ही दिन हम अपने शहर वापस लौट चलेंगे। सभी ने इस पर अपनी सहमति जता दी।

अगले ही दिन शाम के समय वे लोग अपने शहर के लिए चल पड़े। पहली बार पूरा परिवार अपने घर को खाली छोड़ कर गया था। जैसे ही पिताजी ने दरवाज़ा खोलकर अंदर कदम रखा तो उन्हें ऐसा एहसास हुआ कि घर में कोई आकर गया है। सारा बरामदा ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसकी सफाई की हो। जब थोड़ा आगे की ओर बढ़े तो देखा टी० वी० पर एक शादी का कार्ड रखा हुआ है। जाते समय उन्होंने बहुत अच्छी तरह देखा था कि वहाँ कुछ नहीं था। उन्होंने अपने पड़ोसी को बुलाकर उस शादी के कार्ड के बारे पूछा। पड़ोसी ने उन्हें बताते हुए कहा कि भाई साहब हमारे पास न तो आपके घर की चाबी थी और ना ही हमने किसी को इस ओर आते देखा।

हम सब आपस में इसी बात को लेकर चर्चा कर ही रहे थे कि इतने में माताजी ने कहा कि इस कार्ड पर इनका फोन नम्बर लिखा हुआ है क्यों न हम फोन करके इन्हीं से पूछ लें। तभी पिताजी ने बिना देर लगाए अपने मोबाइल से उस नम्बर को डायल किया। फोन लगने पर पिताजी ने पूछा कि भाई, आपने यह कार्ड हमारे घर किसको दिया था। उसने कहा कि आपके घर एक महिला थी जिसने घूँघट डाला हुआ था, उसी ने हमसे यह कार्ड लेकर टी० वी० पर रख दिया और कहा कि मालिक तो दो दिन बाद आने वाले हैं। मेरे पूछने पर वह अपने आपको आपकी रिश्तेदार बता रही थी। यह बात सुनते ही हम सबके होश उड़ गए। खौफ़ के कारण उस रात हम सबको नींद नहीं आई। अगले ही दिन पिताजी ने वह मकान बेच दिया और वे सब शहर के बीच एक नया मकान खरीदकर रहने लगे।

हमज़ा शाहज़ेब
कक्षा - नवमीं

अनोखा सफ़र

एक काफी पुरानी घटना है। विजयनगर के पास एक छोटा-सा नगर था जिसका नाम राजपुर था। विजयनगर से बारह साल की एक लड़की अपनी छुट्टियाँ बिताने अपने मामा के घर राजपुर गई हुई थी। राजपुर जाते समय रास्ते में एक सुंदर बागीचा पड़ता था जिसमें तरह-तरह के फूल खिले रहते थे। इस बागीचे के चारों तरफ भयानक हरे-काले पत्तों की झाड़ियाँ थीं। लोग दूर से तो इस बागीचे में खिले सुंदर फूलों को देखते थे लेकिन झाड़ियों और रास्ते की भयानकता के कारण पास भी जाने से डरा करते थे। यही कारण था कि सारे फूल हमेशा ताजे और सुंदर दिखाई देते थे। इस बागीचे के पास में ही एक सुंदर-सा तालाब था जिसमें गुलाबी रंग के कमल के फूल इसकी सुंदरता में और भी चार चाँद लगा देते थे। जब वह लड़की विजयनगर से मामा के घर राजपुर जा रही थी तो इसकी सुंदरता को देखकर उसने मन में यह निर्णय ले लिया था कि चाहे कुछ भी हो वह इस बागीचे की सैर ज़रूर करेगी।

मामा के यहाँ आठ दिन रहने के बाद उसने अपने मामा से घर जाने की इच्छा प्रकट की तो मामा ने कहा कि वह उसको कल अपने भाई के साथ भेज देंगे। लड़की ने अपने मामा को समझाते हुए कहा कि इसकी उसे कोई ज़रूरत नहीं है, वह ताँगे में बैठकर कल घर चली जाएगी। अब वह इतनी बड़ी हो चुकी है कि बिना डरे घर जा सके। उसके बार-बार ज़िद करने पर मामा ने उसके ताँगे में अकेले घर जाने की इस शर्त पर अनुमति दे दी कि वह रास्ते में कहीं भी उतर कर नहीं घूमेगी। उसने मामा की सारी बातों में अपनी सहमति दे दी।

अगले दिन वह सुबह ही वहाँ से ताँगे में सवार होकर अपने घर के लिए चल पड़ी। रास्ते में बागीचे के सामने उसने ताँगेवाले से कहा कि उसे बहुत जोर से प्यास लगी है। ताँगेवाले ने उसे समझाने की कोशिश की कि यहाँ पर उनका रुकना ठीक नहीं है पर वह लड़की नहीं मानी और ज़िद करके उसी तालाब में पानी पीने के बहाने बागीचे में चली गई। बागीचे में खिले सुंदर-सुंदर फूलों को देखकर वह मंत्रमुग्ध हो गई। उसने एक डाली पर लगे सबसे सुंदर गुलाब के फूल को तोड़ने की कोशिश की। उसी समय वहाँ से एक आवाज़ आई। लड़की तुम फूल मत तोड़ना वरना तुम भी फूल बन जाओगी। उसने चारों ओर देखा लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। वह अपने मन को वश में नहीं कर सकी और उसने जैसे ही उस फूल को हाथ लगाया वह खुद भी एक फूल बन गई। अब वह बहुत घबरा रही थी कि तभी पड़ोस के एक फूल ने कहा कि कभी वह भी उसी की तरह इस बागीचे में फूल बन गया था। अब उसकी समझ में यह आ चुका था कि वह किसी तिलस्म में कैद हो चुकी थी। वह यह सोचकर घबरा रही थी कि उसके साथ अब क्या होगा ? इतने में वहाँ एक तोता आया और उसने जैसे ही उस फूल को अपनी चोंच से काटकर डाल से अलग किया वैसे ही तिलस्म टूट गया और वह फिर से लड़की बन गई। वह समझ चुकी थी कि यहाँ सब कुछ तिलस्म से जुड़ा हुआ है। उसने अपने साहस से पड़ोस के फूल को तोड़कर जैसे ही नीचे गिराया उसमें बंद दूसरी लड़की भी आज़ाद हो गई। दूसरी लड़की ने उसे धन्यवाद देते हुए कहा,'बहन, तुम अगर आज मुझे आज़ाद न करातीं तो पता नहीं कितने समय तक मुझे इस फूल में कैद रहना पड़ता। चलो, अब हम इस तिलस्मी दुनिया से भाग चलते हैं, नहीं तो पता नहीं कौन-सी और नई आफ़त आ जाए।' इतना कहकर दोनों लड़कियाँ विजयनगर की ओर चल पड़ी। जहाँ दोनों तिलस्म से आज़ाद होकर खुश थीं वहीं आज उन्हें जीवन में एक और सीख मिल चुकी थी।

राघवेन्द्र पोदार
कक्षा - सातवीं

दिल्ली की सैर

हमारे विद्यालय में वार्षिक परीक्षाओं के समाप्त होने के बाद विद्यार्थियों को विभिन्न समूहों में विभाजित कर पर्यटन का अनुभव देने के लिए विभिन्न पर्यटन स्थलों पर भेजा जाता है। पिछली बार जब मैं कक्षा पाँच उत्तीर्ण हुआ तो मुझे भी अपने मित्रों के साथ दिल्ली घूमने जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने जब यह सुना कि इस बार मेरी कक्षा के सारे सहपाठी जाने को तैयार हैं तो मेरी खुशी की सीमा न रही। हम सभी मित्र मिलकर दिल्ली घूमने की तैयारी में जुट गए। शाम को ही हमारे समूह के नायक ने हमें यह सूचना दी कि सुबह चलने के लिए हम सबको अभी सारा सामान पैक कर लेना होगा। कल हम सबको लेने के लिए तीन बसें कासीगा स्कूल पहुँच जाएंगी। हम सब जाने के लिए बहुत ही खुश थे इसलिए रात को अच्छी नींद भी नहीं आई।

सुबह होते ही हमें सात बजे तक तैयार हो जाने का आदेश आ गया। जल्दी-जल्दी हम सबने अपने कपड़े पहने और बैग लेकर सुबह का नाश्ता करने पहुँच गए। नाश्ते के बाद ही हम सबकी गिनती की गई और हमें विद्यालय के मुख्य द्वार के बाहर खड़ी बसों तक पहुँचा दिया गया। बस में बैठते ही हम सबने मौज-मस्ती करनी शुरू कर दी। हममें से कोई अपने कानों में म्युजिक डिवाइस लगाए गाने सुनने में मस्त था तो कोई टी० वी० कार्यक्रम की तरह सा रे गा मा के एंकर की तरह सारे सफ़र की एंकरिंग कर रहा था। मेरे सारे मित्र आपस में अंताक्षरी खेल रहे थे। तभी बस ने तेज़ी से ब्रेक लिए और हम सबका ध्यान बस ड्राइवर की ओर पहुँच गया। बस ड्राइवर ने हमें समझाते हुए कहा कि डरने की कोई बात नहीं है, बस के आगे अचानक एक जानवर आ गया था।

दोपहर में लगभग २ बजे हमारी बस चीतल रेस्टोरेंट पहुँची जहाँ हम सब लोगों ने लंच किया। शाम सात बजे हम लोग होटल में पहुँचे जहाँ हमने ताज़गी के लिए स्नान किया और डिनर करके सोने चले गए। अगली सुबह सबसे पहले हमने लोटस टैम्पल देखा फिर कुतुबमीनार देखने गए। दोपहर का खाना खाने के बाद हमने लाल किला का आनंद लिया। हमारे अध्यापक ने हमें लाल किला के निर्माण से लेकर खण्डहर होने तक की सारी कहानी सुनाई। हमें यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि आज भी पंद्रह अगस्त के मौके पर देश के प्रधानमंत्री इसी लाल किले पर खड़े होकर देश की जनता को संदेश देते हैं।

पर्यटन यात्रा के अगले दिन हम लोगों ने संसद भवन और जंतर मंतर घूमा। हमारा देश संसार का एक सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और यहाँ की संसद विश्व की सबसे बड़ी संसदीय प्रणाली का प्रतीक चिह्न है। इस कारण हमें इसे देखकर बड़े ही गर्व का अनुभव हुआ। दिल्ली के दर्शन करने के बाद ऐसा महसूस हुआ कि दिल्ली ही हमारे देश की राजधानी क्यों है ? पर्यटन ज्ञानार्जन का सबसे सशक्त माध्यम है, यह ज्ञान मुझे इसी यात्रा के बाद प्राप्त हुआ।

यश अग्रवाल
कक्षा - सातवीं

विद्यार्थी प्रमुख संपादक - विपुल सिंह, सह-संपादक -हमज़ा शाहज़ेब, शुभ शिखर मिश्र, गुलशन गुप्ता,सहायक - यश अग्रवाल, हर्षित अग्रवाल, सार्थक ठाकुर, विख्यात शिवहरे, आरंभ कंबोज, गुनीत चहाल, यश आनंद वर्मा। छायाकार - युवराज चीमा, यश टंडन । मुख्य पृष्ठ सज्जा- श्रीमान सौमित्र चटर्जी, अध्यापक संपादक मण्डली - डॉ० राजेश कुमार मिश्र, श्रीमती ममता मिश्रा, श्रीमान नवल किशोर बहुगुणा, श्रीमती संगीता शर्मा।